Code : 18

~~HS~~ USS

क्रिसमस तोफा

बचपन के दिनों को याद करने वाला मैं धन्य हूँ। बचपन के पलों सुनहरा था। जिंदगी में सबसे सुहाना पल है बचपन। इसकी मीठी बार-बार नहीं आते। बड़े होने पर हम उसको याद करके दुःखी होता है। पर बचपन में दुख भी होता है। उस दुख को कफी सुधार न पाएँ यहाँ मैं ऐसा ही एक कहानी आपकी सामने प्रस्तुत करती हूँ। पहले ईश्वर का प्रणाम!

कल क्रिसमस है। खुशीयाँ की क्रिसमस। एक बार उसे सोचता हूँ तो खुशी मिलती है। "रेणू.... अरे लड़की जल्दी आओ...। पापा तुम्हारा कब से इंतजार कर रहे हैं।"

"पापा.... आप आगये..!!!"

रेणू पापा को गले लगा लिया।

"मैं तुम्हारे लिए एक तोफा लाया हूँ!!"

रेणू खुशी से कूदने लगी।

"बात कुछ ऐसी है की मैं अपनेसात कोई

को ले आया हूँ"। रेणू अपने छोटा नीला आखों से उस व्यक्ती को ध्यान से देखा। एक आदमी! तो धोती पहना है, चश्मा पहना है, सिर पर साफा है और दाड़ी मूझे भी है। एक अंजान आदमी। तो रेणू के पास आया और कहाँ, "रेणू मैं तुम्हारे लिया एक जड़िया लाया हूँ। तुम्हे पसंद आएँगा।" रेणू ने वो जड़िया लेकर जल्दी से कमरे में घुस गई। "कैसा अजीब आदमी है"? वे सोचने लगी।

आसमान में सूरज के किरण सब जीव के ऊपर गिरपड़ा। पक्षी मधुर गानो सुनाकर पेड़ के पत्तीयाँ हिलकर सुन्दर ~~शब्द~~ आवाज़ निकालने लगी। एक खूबसूरत सुबह! रेणू जल्दी उठ गयी। तब ~~कुछ~~ कुछ आवाज़ आई। रेणू देखा तो वही आदमी कमरे में बैठे-बैठे चाय पीरहा ~~है~~ था।

और वो अखबार पढ़ रहे थे। देखने पर लगता है की अखबार में शब्दों को झुक ~~[illegible]~~ रहे है! ~~है~~ रेणू वहाँ से मुड़कर जाने वाला था। तब वो आदमी ~~मुड़कर~~ पूछा:

"तुम आज स्कूल नहीं जारहे क्या ?"

"हाँ" नज़र हटाकर धीरे से बोला।

रेणू उनके बातों सुनकर वहाँ खड़ी होगयी।

"एक डोलार और 87 सेन्ट, इस क्रिस्तुमस में मेरे प्रिय आतिश को क्या दूँगा? दूधवाले से और सबजी वाले से झगड़ा करकर इकट्टा करके ~~लिखे~~ लगाया है ये एक डोलर और 87 सेन्ट। अपने पुराना सोफा पर लेटे हुए याद करकर दुःखी होना ही मेरा जीवन में लिखी गयी है।"

उनके इस दुख भरी और दर्दनाक कहानी से रेणू उदास होगयी लेकिन वे जल्दी से तैयार होगयी। स्कूल भी तो जाना है ना? रेणू के पीला शरीर वाला काला खिड़की वाला स्कूल बस आगया।

से जगह पर मरकर गिर गया। उस छोटी सी जान को उनके माँ और बाप टी. वी में देखकर रो पड़े। कहने पर दुखी हूँ। उसको कितनी दुख सहनी पड़ी होगी? अपने बच्चे को लाने केलिए अंजान को भेज देनेवाले पालकों केलिए यह एक सबक है........

पिताजी रेणू केलिए खरीदी हुई वो कलर पेनसिलों को नीचे फेक दी। उनमें एक पेनसिल दीवार पर उस लड़की का चित्र खींचा। और वो रेणू को अपने दुनिया में ले गये।....

बचपन में सिर्फ सुख ही नही दुख भी होता है। बचपन के मधुर को लेने के भाग्य को ना मिलकर वो लड़की हमेशा केलिए चली गयी। इसकी तरह मरने में ही है नारी का जन्म। ए समाज कहती है जन्म नही नारी, तो यातना सहना पड़ेगा। यहाँ तुम्हे देने को दर्द ही है तोफा...... क्रिस्मस का तोफा..

धन्यवाद